Vol.7 June 2014 No.12
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

ओ३म का नाम लेंगे

–प्रियवीर हेमाइना

हम जहाँ–जहाँ चलेंगे अभय ओ३म् का नाम लेंगे।
उसकी कृपा, उसका सम्बल हम सदा ही साथ लेंगे।।

यदि दुःख को याद करके हमारे बहेंगे आँसू,
तो वहीं पर रोक लेगा वह ओ३म् हमारे आँसू।
हम जिधर का रुख करेंगे उसका सम्बल साथ लेंगे,
उसकी कृपा, उसका सम्बल हम सदा ही साथ लेंगे।।

हम अगर प्रसन्न होंगे तो प्रसन्न होगा वह भी,
हृदय में या मन में बैठा अभय ओ३म् होगा वह भी,
हम कहीं भी जा रहेंगे, उसका सम्बल साथ लेंगे,
उसकी कृपा, उसका सम्बल हम सदा ही साथ लेंगे।

यदि ओ३म्मय हम रहेंगे, कभी कोई गम न होगा,
उसका प्यार याद करके कभी नयन नम न होगा।
महत्तम प्रताप है उसका, उसका सम्बल साथ लेंगे।
उसकी कृपा, उसका सम्बल हम सदा ही साथ लेंगे।।

नमन ओ३म् को करते हम हैं, हर सुख में हर दुःख में,
उसी ओ३म् ने तो दिया है नित ही साथ हर जनम में।
हम जिधर भी जा रहेंगे उसका सम्बल साथ लेंगे,
उसकी कृपा, उसका सम्बल हम सदा ही साथ लेंगे।।

318, विपिन गार्डन, उत्तम नगर,
नई दिल्ली–110059
मो. 7503070674

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION ACKNOWLEDGES WITH THANKS RECEIPT OF THE DONATION OF Rs.500/- FROM SHRI S.P.RAZDAN, FARIDABAD (HARYANA).
Donations to the Foundation are eligible for Tax Exemption under Section 80G of the Income Tax Act 1960 Vide No.DIT(E)1/3313/DELBE 21670-2503210 dated 25.03.2010

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta
V.President
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer

Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

Brahmarpan June 2014 Vol. 7 No 12
ज्येष्ठ-आषाढ़ 2070 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. ओ३म् का नाम लेंगे 2
-प्रियवीर हेमाइना
2. संपादकीय 4
3. सांख्य द र्न 7
4. ऋषि दयानन्द के आद र्ा : दो नीति लोक 8
-डॉ. भवानीलाल भारतीय
5. अमर बलिदानी महा ाय राजपाल
-वि वनाथ 11
6. आद र्ा कर्मयोगी, संन्यासी : स्वामी दीक्षानन्द जी 16
-वि वनाथ
7. इतिहास पुरुष वीर सावरकर 19
(28 मई को जन्मदिवस पर)
-ि ावकुमार गोयल
8. गोधरा में ट्रेन की आगजनी 28
एक सुनियोजित साजि ा थी
-हरिकृष्ण निगम
9. The Contribution of the Vedas in the 3rd Millennium 31
-Priya Vrata Das
10. Learning From The Upanishads 35
-Ashok Vohra

संपादकीय

चुनावी महाभारत का सुखद अन्त

गीता के प्रथम लोक में धतराष्ट्र संजय को, जिसे दिव्य दष्टि प्राप्त थी, संबोधित करते हुए पूछते हैं–

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवा चैव किमकुर्वत संजय।।

हे संजय! धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में युद्ध करने के लिए उद्यत मेरे प्रिय पुत्र और पांडव क्या कर रहे हैं?

यही स्थिति आज वि ााल भारत में क मीर से कन्याकुमारी तक हो रहे चुनावों की है। हमारे असहाय प्रधानमंत्री जिनके हाथ में काँग्रेस सरकार की बागडोर थी वे अपने और काँग्रेस के भविष्य के बारे में चिंतित हैं और सोच रहे हैं कि उनकी काँग्रेस पार्टी के दिग्गज नेता और उनके विरोधी दल भारतीय जनता पार्टी के नेता, वि ोषतः नरेन्द्र मोदी क्या योजना बना रहे हैं। वे भी धतराष्ट्र की तरह किंकर्तव्यविमूढ़ हैं।

56 दिनों के चुनावों के बाद ब्रह्मार्पण के इस अंक के आपके पास आने तक अन्तिम परिणाम निकल चुके हैं। इस चुनावी दंगल में काँग्रेस की स्थिति संतोषजनक नहीं है। उनके हाथ से सत्ता खिसक रही है। आज 16 मई 2014 को चुनावों के परिणाम भी आ गए हैं। इसमें भारतीय जनता पार्टी और एन. डी. ए. को पूर्ण बहुमत प्राप्त हो गया है।

इस चुनाव में सभी दलों ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी। आँकड़ों की दष्टि से यह अब तक का सबसे महँगा चुनाव रहा है। 1996 के लोकसभा चुनावों में 2500 करोड़ रुपए खर्च हुए। 2009 के चुनाव में यह रा ि बढ़कर 10,000 करोड़ हो गई, परन्तु इस बार के चुनाव में पिछले सभी रिकोर्ड टूटते नज़र आ रहे हैं। इस दौरान चुनाव का कुल खर्च 30,000–35,000 करोड़ रुपए से भी अधिक हो सकता है। इस दौरान चुनाव आयोग ने 3 हजार राजनीतिक रैलियों को अनुमति दी। अपने मैराथन प्रचार में मोदी ने 25 राज्यों में तीन लाख किलोमीटर घूमकर 437 रैलियों को संबोधित किया। उधर राहुल गाँधी और केजरीवाल ने भी अपनी–अपनी पार्टियों के लिए रैलियाँ कीं जो

मोदी के मुक़ाबले बहुत कम थीं। यहाँ इस बार एक बात उल्लेखनीय है कि राजनीतिक दलों का मैदानी चुनाव अभियान उतना नहीं हुआ जितना सो ाल मीडिया द्वारा प्रचार। एक और बात उल्लेखनीय है कि इस बार चुनाव आयोग ने दे ाभर में आचार संहिता के उल्लंघन के एक लाख से अधिक मामले दर्ज किए। फिर भी विभिन्न दलों द्वारा चुनाव आयोग पर विभिन्न दलों से पक्षपात के आरोप भी लगाए गए। परन्तु अधिकां ातः आयोग का कार्य सन्तोषजनक रहा है।

इस बार चुनाव की ख़ास बात यह रही कि सभी राजनीतिक दलों का नि ााना नरेन्द्र मोदी रहे। एक ओर राहुल गाँधी, सोनिया और प्रियंका ने जमकर मोदी के विरोध में प्रचार किया और मोदी की निजी जिंदगी को नि ााना बनाया और सार्वजनिक तौर पर उनकी पत्नी का मामला उठाया। इसके अतिरिक्त उनके एक मित्र की बेटी की सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों को लड़की की जासूसी का मामला बनाकर मोदी को बदनाम करने के लिए जासूसी कांड की जाँच हेतु उच्च न्यायालय के जज की अध्यक्षता में आयोग नियुक्त करने का अनुरोध किया। अन्ततः उनके सहयोगी दलों के विरोध के कारण इसे स्थगित कर दिया गया। अन्य विरोधी दलों ने भी भारतीय जनता पार्टी व मोदी पर अत्यधिक अभद्र टिप्पणियाँ कीं। इस प्रकार की घिनौनी टिप्पणी करने वालों में काँग्रेस के इमरान मसूद, और बेनी प्रसाद वर्मा, समाजवादी पार्टी के आजमखाँ, बहुजन समाजपार्टी की सुश्री मायावती, तणमूल काँग्रेस की ममता बनर्जी और आम आदमी पार्टी के अरविन्द केजरीवाल प्रमुख थे। नरेन्द्र मोदी ने भी यथावसर इन्हें उपयुक्त उत्तर दिया।

चुनाव के अन्तिम चरण में मोदी ने श्री मुरली मनोहर जो ाी को बनारस से हटा कर कानपुर से चुनाव लड़ने का अनुरोध ा किया और स्वयं बनारस में आ डटे। इसके पीछे पार्टी अध यक्ष राजनाथ जी की यह योजना थी कि मोदी के प्रभाव से पूर्वांचल में भी भारतीय जनता पार्टी को लाभ होगा। मोदी के बनारस में आने पर केजरीवाल भी मोदी के मुक़ाबले के लिए दल-बल सहित बनारस आ गए। उधर काँग्रेस ने बनारस से अजय राय (स्थानीय) को अपना उम्मीदवार बनाया। यहाँ सबकी

नज़र जातीय समीकरण और मुस्लिम वोटों पर थी। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हम आज भी जातिवाद और मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति पर चल रहे हैं। और भी बुरी बात यह है कि निरपवाद रूप से सभी दल मुस्लिम वोटों के लिए उनकी सभी तरह की माँगों को मानते चले जाते हैं। मुजफ्फर नगर में दंगों के कारण चुनावी माहौल खूब गरमा गया था। बनारस में पहले मोदी ने उसके बाद राहुल गाँधी, केजरीवाल की आम आदमी पार्टी, फिर समाजवादी पार्टी और यहाँ तक कि सुश्री मायावती ने भी रोड ाो निकाले। इन सभी में खूब भीड़ रही। सभी ने अपना भरपूर जोर लगाया।

हार का ठीकरा सहयोगी दलों पर

अब 2014 के आम चुनाव के परिणाम सामने आ गए हैं। ऐसे में पराजिय काँग्रेस पार्टी दे ाभर में यूपीए सरकार के सहयोगी दलों पर इन्कंबेंसी का ठीकरा फोड़ने के प्रयास में हैं। उनका मानना है मँहगाई, भ्रष्टाचार, अनेकों घोटालों जैसे मुद्दों ने यूपीए के खिलाफ़ माहौल बिगाड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसलिए चुनाव की हार के लिए मनमोहन सिंह सरकार और सहयोगी दल जिम्मेदार हैं। इसके लिए गाँधी परिवार जिम्मेदार नहीं है। गत कुछ समय से पार्टी और सरकार में दूरियाँ दिखाई देने लगी थीं। कई मुद्दों पर पार्टी और सरकार के रुख में स्पष्ट अन्तर सामने आ रहा था। मँहगाई पर काबू न होना, गैस सिलेंडरों का मामला या दागी नेताओं पर चुनाव न लड़ने से रोक वाला ऑर्डिनेंस इन सब बातों पर परस्पर मतभेद सामने आए। काँग्रेस हाईकमान और पार्टी ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में सरकार पर उँगली उठाना ाुरु कर दिया था। स्वयं राहुल गाँधी ने ऑर्डिनेंस की प्रति फाड़कर जहाँ प्रधानमंत्री का अपमान किया वहीं सरकार को भी कटघरे में खड़ा करने का प्रयास किया। अन्ततः चुनाव के बाद सोनिया गाँधी ने काँग्रेस पार्टी की ओर से डिनर देकर प्रधानमंत्री जी को अनौपचारिक विदाई दे दी।

ाीघ्र ही श्री नरेन्द्र मोदी के नेतत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार कार्यभार ग्रहण करेगी और दे ा को नई दि ाा प्रदान करेगी।

संपादक

सांख्य द र्शन (अध्याय-1, सूत्र-78)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

पूर्व सूत्र के संदर्भ में प्र न हो सकता है कि वह मूलकारण प्रकृति ही क्यों हो सकती है,अन्य क्यों नहीं? इसका उत्तर सूत्रकार अगले सूत्र में देते है, सूत्र हैं।

त्रिविधविरोधापत्ते च।।78।।

अर्थ- (त्रिविधविरोधापत्तेः) त्रिविधता के विरोध का आक्षेप होने के कारण से (च) और परिणामिता, अचेतनता आदि के विरोध ा की आपत्ति से।

भावार्थ- यदि त्रिगुणात्मक प्रकृति के अलावा अन्य ई वर आदि को जगत् का मूल उपादान मानें तो संसार में अनुभव की जाने वाली त्रिविधिता के विरोध की प्राप्ति होगी। संसार के प्रत्येक पदार्थ, व्यवहार तथा भावना में त्रिगुणात्मकता दिखाई देती है। इससे त्रिगुणात्मक मूलकारण का अनुमान होता है। ई वर आदि को मूल उपादान कारण मानने पर जगत् में दिखाई देने वाली त्रिगुणात्मकता का विरोध होगा क्योंकि ई वर आदि तत्व त्रिगुणात्मक नहीं हैं। यदि उन्हें भी त्रिगुणात्मक मान लिया जाए तो ाब्द मात्र का भेद होगा, मूलकारण तो त्रिगुणात्मक ही रहेगा। सूत्र में आया हुआ 'च' पद प्रकृति के परिणामी, अचेतन आदि स्वरूप का अर्थ बोध कराता है। ई वर आदि को जगत् का मूलकारण मानने पर यथासंभव इसके परिणामित्व, अचेतनत्व आदि का भी विरोध प्रतीत होगा। उस अवस्था में संसार परिणामी और अचेतन भी नहीं हो सकेगा। यह बात प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों के भी विरुद्ध है। इन सब कारणों से त्रिगुणात्मक प्रकृति को ही जगत् का मूल उपादान स्वीकार करना होगा।

सी-2ए, 16/90 जनकपुरी,
नई दिल्ली-10058

ऋषि दयानन्द के आद ा : दो नीति लोक

-डॉ. भवानीलाल भारतीय

महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में यों तो त ाः नीति लोक उद्धत किये हैं किन्तु इनमें दो लोकों की अपनी वि ाष्टता है। संस्कृत में नीति ाक्षापरक ग्रन्थों का बाहुल्य है। मनुस्मति के अतिरिक्त विदुर नीति (महाभारतान्तर्गत), ाुक्र नीति, कामन्दक नीतिसार, चाणक्य नीति आदि की गणना प्रमुख नीति ग्रन्थों में होती है। ऋषि दयानन्द के जीवन और कर्त्तव्यों के निर्धारण में महाराज भर्तहरि के नीति ातक (संख्या 84) के निम्नलिखित लोक का प्रमुख स्थान रहा है। इसे महाराज ने स्वयं सत्यार्थप्रका ा की समाप्ति पर लिखे गये स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रका ा में उद्धत किया है। प्रासंगिक लोक है-

निन्दन्तु नीति निपुणा यदि व स्तुवन्तु।
लक्ष्मीः समावि ातु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा।
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

नीति निपुण लोग हमारी निन्दा करें या स्तुति करें, लक्ष्मी आये या चली जाये, आज ही मत्यु हो या युगों तक हम जीवित रहें। वस्तुतः धैर्यवान् पुरुष न्याय के मार्ग से कदापि विचलित नहीं होते।

ऋषि ने इस लोक में कथित तीनों बातों को अपने जीवन में अक्षर ाः उतारा था। उनके काल में तथा उनके बाद भी उनके निन्दकों की कभी कमी नहीं रही। विरोधी पण्डितों ने उन्हें ईसाई प्रचारक, गुप्त ईसाई, धर्म विना ाक क्या-क्या नहीं कहा? अनेक स्थानों पर विरोधियों ने उन पर ईंट-पत्थर बरसाये, गाली-गलौच किया। पूना में तो उनका अपमान करने की हद हो गई, जब दुष्ट प्रवत्ति के लोगों ने उनके सम्मान में निकाली ाोभायात्रा के समानान्तर गधे का जुलूस निकाला और उनके प्रति अवाच्य बातें कहीं। तथापि ऐसी विपरीत

स्थितियों में भी वे निर्विकार, अविचल तथा स्थिरमति रहे। गीता में कथित स्थित प्रज्ञ व्यक्ति के लक्षण उनमें पूर्णतया घटते हैं जब वे सुख-दुख, लाभ-अलाभ, जय-पराजय में निर्विकार रहते थे।

इसके विपरीत उनके जीवनकाल में उनकी प्र ांसा भी कम नहीं हुई। राजाओं, महाराजाओं ने तो उनको सराहा ही किन्तु उनकी कीर्ति सुरभि सात समुद्रपार अमेरिका तक पहुँची जब थियोसोफी के संस्थापकों ने उनके विचार जाने और उनसे प्रत्यक्ष भेंट करने के लिए भारत आये। निष्पक्ष राजनेताओं और प्र ाासकों ने उन्हें आदर दिया तथा सुधारक समुदाय (ब्राह्म नेता देवेन्द्रनाथ ठाकुर, के ावचन्द्र सेन आदि) ने उन्हें भारत का प्रमुख धर्मसुधारक तथा समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने वाला समझा।

जहाँ तक धन-सम्पत्ति का सम्बन्ध है, उसके प्रति उनमें किसी प्रकार का मोह या आसक्ति नहीं थी। अपने धनाढ्य पिता का सम्पन्न घर छोड़कर वे वैराग्य पथ के पथिक बन गए। उन्होंने ऊखीमठ के महन्त द्वारा प्रस्तावित उस मठ के महन्त की गद्दी अस्वीकार कर दी। उदयपुर के महाराणा द्वारा एकलिंग महादेव के मंदिर का अधिकार देने के प्रलोभन को ठुकराने में उन्हें एक क्षण भी नहीं लगा। जब का ाी के पण्डितों ने उनसे आग्रह किया कि वे मूर्तिपूजा का खण्डन छोड़ दें तथा बदले में ांकाराचार्य की पीठ के अधिष्ठाता बन जायें तो इस प्रस्ताव को ठुकराने में उन्होंने तनिक भी देर नहीं की। संसारिक वैभव से कन्नी काटने वाला ऐसा इन्सान तो फरि ता ही कहला सकता है।

जहाँ तक जीवन और मत्यु का प्र न है, उनके प्राणहरण की अनेक चेष्टाएँ की गईं, अनेक बार विष दिया गया। उन पर राव कर्णसिंह ने तलवार से प्रहार का दुस्साहस किया। अन्ततः आततायियों के षड्यंत्र के ि ाकार होकर उन्होंने अपनी जीवनलीला भी समाप्त कर दी, किन्तु अपने धर्म, सत्य और

न्याय के पथ से कभी विचलित नहीं हुए। सचमुच उन्होंने भर्तहरि के उक्त लोक के आद ा को अपने जीवन का आद ा बना लिया था।

एक अन्य नीति लोक ने उन्हें प्रभावित किया वह था महाभारत के उद्योग पर्व की विदुर द्वारा कथित उक्ति। अपने छोटे भाई नीतिमान विदुर को जब अनुज धतराष्ट्र ने बुलाया और अपनी सम्मत्ति देने को कहा, जिसे महाभारत ने विस्तार से उद्योग पर्व में लिखा है। यहाँ विदुर कहते हैं।

वहबः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।

अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः। (महाभारत उद्योगपर्व अध्याय 36-15)

हे राजन् ऐसे पुरुष बहुत होते हैं जो प्रियभाषी होते हैं। अपने स्वामी को प्रसन्न करने के लिए अति ायोक्ति करने से भी नहीं चूकते, कभी-कभी मालिक को खु ा करने के लिए उन्हें झूठ बोलने से भी परहेज नहीं होता। परन्तु ऐसे वक्ता और उनके श्रोता तो दुर्लभ ही हैं जो उस कटु सत्य को कहने में संकोच नहीं करते जो सुनने वाले के लिए हितकारी होता है, भले ही वह सुनने में अप्रिय हो। खुद स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन में इसी आद ा को अपने सामने रखा। उन्होंने सत्य, न्याय और धर्म को आगे रख कर ही बातें कहीं। कहीं भी सामने वाले को, चाहे वह कितना बड़ा ाक्ति ााली सामन्त ही क्यों न हो, कभी खु ाामद भरी और मुँहदेखी बात नहीं की। उनका साक्षात्कार उस युग के राजा-महाराजाओं, उच्च प्र ाासनिक अधिकारियों तथा सामान्यजनों से होता था, परन्तु उन्होंने कभी लागलपेट वाली बातें नहीं कीं। नीतिकार ने यह तो कहा है कि सत्य बोलो, प्रिय बोलो। एक कदम आगे रखकर दयानन्द ने कहा अप्रिय सत्य कहने में भी कभी संकोच मत करो। वे सबसे यह अपेक्षा रखते थे कि वे विदुर की इस उक्ति को अपने जीवन का आद ा बनायें।

315, ंकर कालोनी, श्री गंगानगर

अमर बलिदानी महा ाय राजपाल

-वि वनाथ

दे ा में एक वि ोष प्रकार का जो ा, धर्म के प्रति गहरी आस्था, समाज सुधार और दे ा की आजादी के लिए कुछ कर गुज़रने की तमन्ना-ये सब बातें उन दिनों किसी भी आर्यसमाजी की पहचान होती थी। महा ाय राजपाल जी में यह सब गुण कुछ अधिक ही मात्रा में थे। वे आर्यसमाज के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर रहते थे। एक साधारण से परिवार में जन्म लेकर, मात्र मीडिल क्लास तक ि ाक्षा पाने के बाद, घरेलू परिस्थितियों के कारण मामूली वेतन पर नौकरी करते हुए भी वे आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय भाग लेते थे। इतना ही नहीं उन्होंने एक युवक-समाज भी संगठित कर रखा था जिसमें अपने कुछ मित्रों के साथ वे समाज की द ाा और सुधार के उपायों पर परस्पर चर्चा किया करते थे। उस ज़माने में हिन्दू समाज अनेक बुराइयों के ग्रसित था, जैसे-छुआछूत, लड़कियों को स्कूल न भेजना, अंधवि वास, अंग्रेजों के प्रति मानसिक दासता-इन सब बुराइयों को जड़ से उखाड़ने का आंदोलन आर्यसमाज ने चला रखा था। उन दिनों अन्य युवकों के साथ राजपाल जी भी अपना अधिक समय समाज-सुधार के इन कार्यों में देते थे।

इन्हीं दिनों वे आर्यसमाज के दो प्रमुख नेताओं स्वामी श्रद्धानन्द जी और महा ाय कृष्ण जी के सम्पर्क में आये। स्वामी श्रद्धानन्द जी को एक ऐसे समर्पित युवा सहायक की आव यकता थी जो उनके पत्र **'सद्धर्म प्रचारक'** के संपादन में सहयोगी हो सके। वे राजपाल जी को अपने साथ जालंधर ले गए, जहाँ उन्होंने बड़ी कु ालता से यह कार्य सम्पन्न किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के निकट संपर्क ने सोने पर सुहागे का काम किया। उनकी संपादकीय योग्यता से प्रभावित होकर महा ाय कृष्ण जी ने उन्हें, स्वामीजी की सहमति से अपने नये साप्ताहिक पत्र **'प्रका ा'** का संपादन कार्य सौंपा। वे आजीवन महा ाय कृष्ण जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर समर्पित भाव से **'प्रका ा'** और उसके बाद **'दैनिक प्रताप'** के संपादन

और व्यवस्था में महा ाय कृष्ण जी का दायाँ हाथ बनकर रहे। इन दोनों महापुरुषों ने उनके जीवन को नई दि ाा, नई प्रेरणा और आर्यसमाज के लिए सर्वस्व अर्पण करने की दढ़ता भी दी।

बाद में आजीविका के लिए उन्होंने लेखन, संपादन और प्रका ान का काम अपनाया और उस ज़माने में जब उर्दू ही राजभाषा थी, उन्होंने उर्दू के साथ हिन्दी को भी भरसक बढ़ावा दिया। एक साथ चार भाषाओं उर्दू, अंग्रेजी, गुरमुखी और हिन्दी में साहित्य प्रका ात किया। अधिकां ा पुस्तकें उर्दू और हिन्दी में प्रका ात कीं। उन्हें पंजाब में हिन्दी प्रका ान का अग्रदूत कहा जाता है।

स्वतंत्रता के पहले पंजाब में हिन्दी का प्रचलन बहुत कम था, हिन्दी के प्रका ाक तो नगण्य थे। अधिकतर पुस्तकें उर्दू या पंजाबी में प्रका ात होती थीं। उस जमाने में महा ाय राजपाल जी ने 'आर्य पुस्तकालय' तथा 'सरस्वती आश्रम' नामों के अंतर्गत हिन्दी प्रका ान का न केवल श्रीगणे ा किया बल्कि वे हिन्दी के प्रचार-प्रसार के स ाक्त माध्यम बने। सन् 1920 और 1930 के द ाक में राजपाल जी ने चार भाषाओं में एक साथ उच्च स्तरीय पुस्तकें प्रका ात कीं। हिन्दी और उर्दू में उनके द्वारा प्रका ात पुस्तकों की संख्या 200 से ऊपर थी। अंग्रेजी में सुनियोजित ढंग से अनेक पुस्तकें प्रका ात कीं जो उस समय के उन विख्यात विद्वानों द्वारा लिखी गई थीं, जिनका अंग्रेजी पर पूरा अधिकार था। पं. गुरुदत्त, एम.ए. जो गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर में प्रोफेसर थे और डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर में प्रोफेसर थे और डी.ए.वी. कॉलेज के संस्थापकों में थे, उनकी 400 पष्ठ की पुस्तक **'विज़डम ऑफ रि ाीज'** भी इनमें से एक थी। अपने विषय पर यह पुस्तक आज भी प्रामाणिक दस्तावेज़ के समान मानी जाती है।

प्रका ान की स्वतंत्रता

विचार-स्वातन्त्र्य और प्रका ाक की स्वतंत्रता सदियों से कठिन परीक्षा से गुज़र रही है। इतिहास साक्षी है कि सम्राटों ने और धर्मगुरुओं ने, जब भी कोई पुस्तक अथवा विचारधारा उनके

मत के प्रतिकूल हुई तो, उसे दबा देने, पुस्तक की प्रतियाँ जब्त कर लेने अथवा उन्हें जला देने तथा ऐसे विचारकों और लेखकों को मत्यु-दण्ड देने तक में जरा भी हिचक नहीं की। अनेक लेखकों को कारावास के दंड भुगतने पड़े, उन्हें कत्ल कर दिया गया।

महा ाय राजपाल जी ने भी आर्यसमाज के लिए अपने प्राणों की बलि दी। इस सदी के पहले तीन द ाक अर्थात् सन् 1930 तक विभिन्न धर्मों में एक-दूसरे की तीखी आलोचना, वाद-विवाद, ाास्त्रार्थ, बहस-मुबाहसों का चलन था। एक धर्मावलंबी अन्य धर्मों के मंतव्यों पर दो टूक भाषा में लिखा करता था और अपने धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करता था। इन्हीं दिनों मुसलमानों की ओर से दो पुस्तकें प्रका ात की गईं- **'कृष्ण तेरी गीता जलानी पड़ेगी'** और **'उन्नीसवी सदी का महर्षि।'** उन दोनों पुस्तकों में योगे वर श्रीकृष्ण और महर्षि दयानन्द पर बहुत ही भद्दे और अ लील ाब्दों में कीचड़ उछाला गया था। जैसा उस समय का चलन था, इन दोनों पुस्तकों के प्रत्युत्तर में महा ाय राजपाल जी ने **'रंगीला रसूल'** नाम की पुस्तक सन् 1923 में प्रका ात की। इस पुस्तक पर लेखक के नाम के स्थान पर 'दूध का दूध और पानी का पानी' लिखा था। वास्तव में इसके लेखक आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान पं. चमूपति थे, जो संभावित प्रतिक्रिया के कारण अपना नाम नहीं देना चाहते थे। उन्होंने महा ाय राजपाल जी से यह वचन ले लिया था कि चाहे कितनी भी विकट परिस्थितियाँ क्यों न बनें वह किसी को भी उक्त पुस्तक के लेखक के रूप में उनका नाम नहीं बताएँगे। महा ाय राजपाल जी ने अपने इस वचन की रक्षा अपने प्राणों की बलि देकर की। चमूपति जी उनके अंतरंग मित्र थे, उन पर जरा भी आँच नहीं आने दी। इस प्रसंग में राजपाल जी को, एक प्रका ाक के नाते वर्षों अदालत में भटकना पड़ा से ान से छः महीने कैद की सजा भी हुई जो हाईकोर्ट ने रद्द कर दी। फिर, उन पर तीन कातिलाना हमले हुए, जिनमें अंतिम 6 अप्रैल, 1929 का आक्रमण राजपाल जी के लिए

प्राणलेवा बना।
सन् 1924 में यह मुकद्दमा ुरू हुआ था। सन् 1929 में राजपाल जी का बलिदान हुआ। इन पाँच वर्षों में उनसे अनेक बार यह कहा गया कि आप असली लेखक का नाम बता दें तो हमें आपसे कोई िकायत नहीं रहेगी। यह बात उस जमाने के प्रमुख मुस्लिम दैनिक-पत्र 'जमींदार' में भी प्रकाि त हुई, परंतु महा ाय राजपाल जी ने एक ही बात दोहराई कि इस पुस्तक के लेखन-प्रका ान की पूरी जिम्मेदारी मेरी है, अन्य किसी की नहीं। उन्होंने जो वचन दिया, अंत तक निभाया।
इन्हीं पाँच वर्षों के दौरान उन्हें यह भी कहा गया कि आप इस पुस्तक का प्रका ान बंद कर दें और माँफी माँग लें। राजपाल जी ने एक ही उत्तर दिया कि मैं विचार-स्वातंत्र्य और प्रका ान की स्वतंत्रता में वि वास रखता हूँ और अपनी इस मान्यता के लिए बड़े से बड़ा दंड भुगतने के लिए तैयार हूँ। इसी प्रसंग में एक बात और महा ाय राजपाल जी द्वारा प्रकाि त अनेक पुस्तकों पर तत्कालीन ब्रिटि ा सरकार ने मुकद्दमे चलाये, जुर्माने किए और ऐसी पुस्तकों के संस्करण भी जब्त कर लिए। इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान भाई परमानंद जी ने, जिन्हें ब्रिटि ा सरकार ने कालेपानी की सज़ा दी थी, अनेक इतिहास की पुस्तकें राष्ट्रीय दष्टिकोण से लिखी थीं। ये सभी पुस्तकें राजपाल जी ने प्रकाि त की थीं। इनमें से **'तारीख-ए-हिन्द'** (भारत का इतिहास) पुस्तक छपते ही जब्त कर ली गई और मुकद्दमा भी चला। इसी तरह एक अन्य पुस्तक **'दे ा की बात'** जो हिन्दी में प्रकाि त हुई थी, उस पर बनारस की अदालत में मुकद्दमा चला, जिसके सिलसिले में उन्हें अनेक बार लाहौर से बनारस की यात्राएँ करनी पड़ीं। अन्य भी ऐसी अनेक पुस्तकें हैं जिनके प्रका ान के कारण वे ब्रिटि ा सरकार के कोपभाजन बने- जैसे डॉ. सत्यपाल द्वारा लिखित **'पंजाब-बीती अथवा जलियाँवाला बाग का हत्याकांड, 'कालेपानी के कारावास की कहानी'** (भाई परमानंद) इत्यादि।

अच्छे साहित्य की आव यकता

"यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि किसी दे ा की उन्नति उसके

ऊँचे स्थायी साहित्य व कथनी–करनी के धनी लेखकों एवं विद्वानों पर निर्भर करती है। संसार में कोई भी ऐसा दे ा न मिलेगा। जिसके पास अच्छा साहित्य तथा कर्त्तव्यपरायण लेखक न हों और फिर भी उसने उन्नति की हो। प्राचीन ऐतिहासिक दष्टांतों को छोड़ दें, वर्तमान उन्नति ाील दे ाों की ओर दष्टि डालें तो आपको पता लग जाएगा कि उन्नति के पथ पर वही बढ़ रहे हैं जिनका साहित्य अच्छा है। व्याख्यान व उपदे ा भी अपने स्थान पर बहुत अच्छा प्रभाव डालते हैं, परंतु साहित्य का प्रभाव अत्यंत स्थायी व असीम होता है।

साहित्य की कमी

परंतु खेद का विषय है कि आज अच्छे साहित्य के सजन की किसी को चिंता नहीं। पहले तो कुछ संस्थाएँ इस दि ाा में कुछ प्र ांसनीय उद्योग करती थीं परंतु अब तो जो कुछ भी हो रहा है, अपने–अपने स्थान पर कुछ व्यक्ति ही पुरुषार्थ कर रहे हैं। जिनमें योग्यता है वे और धंधों में फँसे हुए हैं और पुस्तक–निर्माण का कार्य ऐसे अयोग्य हाथों में आ रहा है जिनसे लाभ की बजाय हानि हो रही है। जिन रामायण व महाभारत, पर पहले ही अनेक टीकाएँ व ग्रंथ उपलब्ध हैं, उन्हीं पर ाक्ति लगाई जा रही है। बहुत कम पुस्तकें ऐसी प्रका ाित हुई हैं जिनको स्थायी साहित्य का स्थान दिया जा सके।

महा ाय राजपाल जी की आयु उनके बलिदान के समय केवल 44 वर्ष थी। अपने छोटे से जीवन–काल में उन्होंने न केवल वैदिक पुस्तकों के प्रका ान में नए कीर्तिमान स्थापित किए, अपितु सुदूर दे ाों में बसे भारतीय मूल के लोगों तक उन्हें पहुँचाने में भी योजनाबद्ध ढंग से सफल प्रयत्न किया। उनके जीवन–काल में उनके प्रका ान मॉरि ास, फिजी, पूर्वी अफ्रीका, ब्रिटि ा तथा डच गयाना आदि स्थानों पर बड़ी संख्या में जाते थे और यह प्रका ान आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार के वि ोष साधन बने। पुस्तकों के सोद्दे य संदे ावाहक वैदिक साहित्य के निर्माण, प्रचार–प्रसार में उनकी ऐतिहासिक भूमिका रही है।

प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

आद ा कर्मयोगी, संन्यासी : स्वामी दीक्षानन्द जी

-वि वनाथ

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में संन्यासियों का बहुत योगदान रहा है। एक समय था जब आज से लगभग 60-70 वर्ष पहले; जिसे आर्यसमाज का स्वर्ण युग भी कहा जा सकता है, एक से एक तेजस्वी, वेदों के वि ोष विद्वान्, प्रभाव ााली व्यक्ति और समाज को पूरा जीवन समर्पित करने वाले, श्री दयानन्द जी के दीवाने, बीसियों संन्यासी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में, कोने-कोने में आर्यसमाज और वेदों का संदे ा फैला रहे थे। उनके प्रभाव ााली व्यक्तितत्व, उनके आद ा जीवन मूल्य, उनकी विद्वत्ता सभी से चुम्बक की भाँति प्रेरित होकर लोग आर्यसमाज की ओर खिंचे चले आते थे। नाम लिखने लगूँगा तो एक ंखला बन जायेगी। दे ा की स्वतंत्रता के बाद अनुयायियों में उत्तरोत्तर ि ाथिलता आई है। उंगलियों पर ही गिने जाने वाले संन्यासी रह गये हैं, जो अपने-अपने क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी कार्य कर रहे हैं। उनके प्रति हमें नत-मस्तक होना चाहिए। आर्य संन्यासियों में एक उज्ज्वल और दीप्तिमान् नक्षत्र के रूप में स्वामी दीक्षानंद जी थे जिनकी आभा और प्रभाव से कोई अछूता नहीं रह सकता था। वह बुद्धदेव जी विद्यालंकार के आश्रम में, ब्रह्मचारी कृष्ण के रूप में समाज के क्षेत्र में उतरे। उन दिनों उनका तेजस्वी ारीर, उनके मुखमंडल की आभा, उनकी विद्वत्ता का वर्चस्व, सभी को प्रभावित करता था, ठीक स्वामी श्रद्धानन्द जी की तरह, जिन्हें एक अंग्रेज उच्च अधिकारी ने महात्मा ईसा के समतुल्य माना था। मुझे स्मरण है कि जब मैंने आचार्य कृष्ण जी का पहला उपदे ा सुना जो अन्य प्रवचनों से हटकर ज्ञान-विज्ञान और तर्क पर आधारित होते हुए भी एकदम से हृदय को छूने वाला था। उनकी वाणी में सरस्वती का वास था और एक वि ोष ओज भी।

अंततः जब उन्होंने संन्यास आश्रम में प्रवे ा किया तो पंडित

बुद्धदेव जी विद्यालंकार की लीक पर चलकर सारा जीवन आर्ष साहित्य के सजन, प्रका ान और प्रचार-प्रसार में लगा दिया। पता नहीं कैसे अनेक समाजों के आयोजनों में भाग लेते हुए अत्यंत व्यस्तता में भी कैसे मौलिक साहित्य सजन भी किया और सैकड़ों पुस्तकें प्रकाि ात कीं, ऐसी पुस्तकें जिन्हें आधारभूत साहित्य कहा जा सकता है, ाा वत साहित्य, ऐसी पुस्तक जो जीवन की दि ाा को बदल सकती है, प्रेरणा तो देती ही है। जिस बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया वह है- पूज्य स्वामी जी की लगन कि जो भी पुस्तक प्रकाि ात हो, उसका प्रका ान अत्यंत श्रेष्ठ हो। कागज़ बढ़िया, बढ़िया छपाई, कपड़े की पक्की जिल्द और इन सबसे बढ़कर ाुद्ध छपाई। वे आँखों की कमजोरी होने पर भी स्वयं पुस्तकों के प्रूफ पढ़ते थे ताकि पुस्तकें श्रेष्ठतम रूप में छपें। हर छोटी से छोटी बात में स्वयं रुचि रखते थे ताकि पुस्तक श्रेष्ठ रूप में छपे। मैंने एक बार पहले भी कहा था और आज इसे दोहराने में कोई संकोच नहीं है कि स्वामी जी एक व्यक्ति नहीं एक संस्था थे, जिन्होंने आर्य संस्थाओं से कहीं बढ़-चढ़कर स्वयं अकेले ही आर्यसमाज के साहित्य में अपूर्व वद्धि की। उन्होंने न केवल पुरुष सूक्त की व्याख्या पर बह्द ग्रंथ का प्रका ान किया और ऐसे ही अनेक लुप्तप्राय परन्तु अत्यंत उपयोगी ग्रंथों का पुनर्मुद्रण किया। पिछले 2-3 वर्षों में मेरे केवल एक बार के अनुरोध पर ही उन्होंने जिन तीन महत्त्वपूर्ण पुस्तकों को अत्यन्त सुचारू, सर्वांग संपूर्ण रूप में प्रकाि ात किया, उनके नाम देना चाहूँगा।

1. श्री सत्यकाम विद्यालंकार द्वारा रचित वेद मंत्रों के आधार पर उनके गीत व उनके काव्य/पुस्तक का नाम-**वेद गीतांजलि**।

2. सत्यार्थप्रका ा का संपूर्ण काव्य अनुवाद-तुलसीकृत रामायण की भाँति दोहों और चौपाई में। पुस्तक का नामः **सत्यार्थप्रका ा कवितामत**, लेखक : कविराज जयगोपाल जी।

3. महर्षि दयानन्द जी का भावमय सरस, अत्यंत रोचक, वि ााल जीवन चरित्र, जो स्वामी सत्यानन्द जी ने आज से 70 वर्ष पूर्व लिखा था। बड़े साइज में प्रका ात इस पुस्तक के सभी पष्ठ दो रंगों में छपे थे। कपड़े की सुदढ़ जिल्द है, जिस पर सुनहरे अक्षरों में पुस्तक का नाम सोने पे सुहागे का काम स्वामी जी ने यह किया कि इसमें पूरे साइज के बीसियों रंगीन चित्र दयानन्द जी के जीवन के दिये हैं। ये चित्र अब भी उपलब्ध हैं।

अनेक गहस्थों में उन्होंने सामवेद के यज्ञ करवाये और उनकी प्रेरणा से कितने ही यज्ञ हुए।

स्वामी जी ने वैदिक ोध और उच्चकोटि के ग्रन्थों के प्रका ान का जो गुरुतर कार्य आरम्भ और सम्पादित किया, उसे तीव्र गति से न केवल जारी रखना अपितु बढ़ाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

- गुणों का आदर सर्वत्र रहता है।
- सबसे उत्तम बदला क्षमा कर देना है।
- चरित्र ही सबसे बड़ा धन है।
- जिज्ञासा के बिना ज्ञान नहीं होता है।
- ज्ञान मनुष्य जीवन का सार है।
- जीवन का सत्य है प्रसन्नता।
- उठो जागो और चल पड़ो।
- मौन और एकांत आत्मा के सर्वोत्तम मित्र है।
- आत्मिक ाक्ति ही वास्तविक ाक्ति है।
- हिंदी न जानने से गूँगा रहना बेहतर है।

BRAMARPAN ON WEBSITE

WE ARE HAPPY TO STATE THAT THE ISSUES OF OUR MONTHLY JOURNAL BRAHMARPAN ARE NOW ALSO AVAILABE ON THE WEBSITE www.thearyasamaj.org of DELHI ARYA PRATINIDHI SABHA.

इतिहास पुरुष वीर सावरकर
(28 मई को जन्मदिवस पर)

–f ाविकुमार गोयल

वीर विनायक दामोदर सावरकर भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के एक तेजस्वी नक्षत्र थे। आगे चलकर 'वीर सावरकर' ाब्द साहस, वीरता, दे ाभक्ति का पर्यायवाची बन गया है। 'वीर सावरकर' ाब्द के स्मरण करते ही अनुपम त्याग, अदम्य साहस, महान् वीरता, उत्कृष्ट दे ाभक्ति से ओत-प्रोत इतिहास के स्वर्णिम पष्ठ हमारे सामने साकार हो उठते हैं।

वीर सावरकर न केवल स्वाधीनता-संग्राम के एक तेजस्वी सेनानी थे अपितु वह एक महान् क्रान्तिकारी, चिन्तक, सिद्धहस्त लेखक, कवि, ओजस्वी वक्ता तथा दूरद ीं राजनेता भी थे। वे एक ऐसे भारतीय इतिहासकार भी थे जिन्होंने हिन्दू राष्ट्र की विजय के इतिहास को प्रामाणिक ढंग से लिपिबद्ध किया तो 1857 के प्रथम 'स्वातंत्र्य-समर' का सनसनीखेज व खोजपूर्ण इतिहास लिखकर ब्रिटि ा ाासन को हिला डाला था। उनका यह महान् ग्रन्थ प्रका ित होने से पूर्व ही जब्त कर लिया गया था।

इस महान क्रान्तिपुंज का जन्म महाराष्ट्र के नासिक जिले के ग्राम भगूर में चितपावन वं ीय ब्राह्मण श्री दामोदर सावरकर के घर 28 मई सन् 1883 को हुआ था। विनायक के पिता श्री दामोदर तथा माता राधाबाई दोनों ही हिन्दुत्वाभिमानी व धार्मिक वत्ति के थे। माता-पिता बालक विनायक को भगवान राम, कृष्ण, ि ाव, हनुमान आदि की पौराणिक कथायें सुनाते। उसे ि ावाजी, महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह द्वारा विधर्मियों से किये गये संघर्षों की ऐतिहासिक गाथायें सुनाते।

राधाबाई विनायक को 10 वर्ष का छोड़कर अचानक स्वर्गवासी हो गईं। माँ की पूजा का भार नन्हे-मुन्ने विनायक पर आ गया। वह उनकी मूर्ति के समक्ष गुनगुनाता- 'हे माँ, मेरे दे ा भारत को विदे ाी विधर्मी अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त करो। मेरे

दे ा में 'हिन्दवी स्वराज्य' की स्थापना होनी चाहिए।"

विनायक को पाँचवीं कक्षा तक गाँव के स्कूल में ही ि ाक्षा दिलाई गयी। पाँचवीं पास करते ही उसे पढ़ाई के लिए नासिक भेज दिया गया।

लोकमान्य तिलक द्वारा संचालित 'केसरी' पत्र की उन दिनों भारी धूम थी। 'केसरी' में प्रका ात लेखों को पढ़कर विनायक सावरकर के हृदय में राष्ट्रभक्ति की भावनायें हिलोरें लेने लगीं। लेखों, सम्पादकीय व कविताओं को पढ़कर उन्होंने जाना कि भारत को दासता के चंगुल में रखकर अंग्रेज किस प्रकार भारत का ोषण कर रहे हैं और हम दे ा में गुलामी का जीवन बिता रहे हैं। विनायक ने अपने साथियों को इकट्ठा कर प्रतिज्ञा की कि हम दे ा की स्वाधीनता के लिए जीवन के अन्तिम क्षण तक स ास्त्र क्रान्ति के माध्यम से जूझते रहेंगे।" उन्होंने जो ीले व राष्ट्रभक्त साथियों के साथ मिलकर 'मित्र मेला' संस्था के तत्वावधान में 'गणे ोत्सव', 'ि ावाजी महोत्सव' आदि कार्यक्रम आयोजित करके युवकों में स्वाधीनता के प्रति चेतना पैदा करने का कार्य ुरू किया।

नासिक के बाद सावरकर पुणे के फर्ग्यूसन कॉलिज में इण्टरमीडिएट में दाखिल हुए तो वहाँ भी वह क्रान्तिकारी गतिविधियों में सक्रिय रहने लगे। यहाँ उन्होंने कवितायें तथा लेख लिखने ुरू कर दिये। उनकी रचनायें मराठी पत्रों में धड़ल्ले से प्रका ात होने लगीं। 'काल' के सम्पादक श्री परांजपे ने अपने पत्र में सावरकर की कुछ रचनाएँ प्रका ात कीं जिन्होंने तहलका मचा दिया। श्री परांजपे ने ही सावरकर का परिचय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक से कराया। युवक सावरकर के लेखन तथा तेजस्वी व्यक्तित्व से तिलक अत्यधिक प्रभावित हुए।

विदे ी वस्त्रों की होली

सन् 1904 में सावरकर बी.ए. के छात्र थे। उन्होंने एक लेख में विदे ी वस्तुओं के बहिष्कार का आह्वान किया। इसके बाद

उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर विदे ाी वस्त्रों की होली जलाने का कार्यक्रम बनाया। तिलक जी की अध्यक्षता में हुई सभा में सावरकर ने विदे ाी वस्तुओं के बहिष्कार की आव यकता पर जोरदार भाषण दिया। इसके बाद विदे ाी कपड़ों के ढेर को अग्नि को समर्पित कर दिया गया। परिणामस्वरूप फर्ग्यूसन कॉलिज के अधिकारियों ने सावरकर को कॉलिज से निष्कासित कर दिया। पूना के कालिज से निष्कासित होने के बाद बम्बई वि वविद्यालय ने किसी प्रकार सावरकर को बी.ए. की परीक्षा देने की अनुमति दे दी।

विदे ा जाने की योजना

सावरकर की योजना थी कि किसी प्रकार विदे ा जाकर बम आदि बनाना सीखें तथा ास्त्रास्त्र प्राप्त किये जायें। इसी बीच महर्षि दयानन्द के अनन्य ि ाष्य महान् राष्ट्रभक्त श्री यामजीकृष्ण वर्मा ने, जो लन्दन में रहकर भारत की स्वाधीनता के लिए प्रयासरत थे, प्रतिभा ाली भारतीय छात्रों को इंग्लैण्ड की पढ़ाई के लिए छात्रवत्ति देने की घोषणा की। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक चाहते थे कि सावरकर जैसा तेजस्वी युवक किसी प्रकार इंग्लैण्ड पहुँच जाये तो बहुत काम हो सकता है। उन्होंने यामजीकृष्ण वर्मा को लिखा कि वह "ि ावाजी छात्रवत्ति' विनायक दामोदर सावरकर को दें जिससे वह कानून के अध्ययन के साथ-साथ दे ा की स्वाधीनता में भी योगदान कर सके। तिलक जी का पत्र मिलते ही श्री यामजीकृष्ण वर्मा ने सावरकर को छात्रवत्ति देने की घोषणा कर दी। 9 जून, 1906 को सावरकर इंग्लैण्ड के लिए रवाना हो गये।

सावरकर लंदन में श्री यामजीकृष्ण वर्मा द्वारा संचालित 'इंण्डिया हाउस' में ठहरे। उन्होंने वहाँ पहुँचते ही अपनी विचारधारा के भारतीय युवकों को एकत्रित करना ाुरू कर दिया। उन्होंने वकालत के अध्ययन के लिए 'ग्रेज-इन' में प्रवे ा भी ले लिया।

सावरकर ने लंदन में फ्री 'इंडिया सोसायटी' की स्थापना की।

इस संस्था के तत्वावधान में भारतीय युवक संगठित होने लगे। वे कभी भारतीय पर्व मनाते तो कभी भारतीय महापुरुषों की जयन्तियाँ मनाते। उन्होंने ि ावाजी, महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह आदि वीरों की जयन्तियाँ आयोजित कीं। भारतीय युवक उनके तेजस्वी व्यक्तित्व व ओजस्वी वाणी के कारण उनसे प्रभावित होने लगे। 'इंडिया हाउस' में उन दिनों भाई परमानन्द, सरदारसिंह राणा, ज्ञानचन्द्र वर्मा, मैडम कामा जैसी विभूतियाँ भी रह रही थीं। ये सभी सावरकर के व्यक्तित्व से प्रभावित थे।

अक्तूबर, 1906 में महात्मा गाँधी इंग्लैण्ड गये तो वे 'इंडिया हाउस' में भी आए। वहाँ उनकी सावरकर तथा यामजीकृष्ण वर्मा से भारतीय स्वाधीनता के बारे में चर्चायें हुईं।

बम व ास्त्र भिजवाये

सावरकर ने गुप्त रूप से बम बनाने की विधि का अध्ययन किया। उन्होंने लंदन से अपने दो वि वस्त साथियों को बम बनाना सीखने के लिए पेरिस भेजा। भारत में 'अभिनव भारत' के सदस्यों ने भी बम बनाने ुरू कर दिये। 30 अप्रैल 1908 को खुदीराम बोस ने मुजफ्फरपुर में मुख्य प्रेसीडेंसी न्यायाधी ा किंग्सफोर्ड पर बम फेंककर तहलका मचा दिया। दुर्भाग्य से किंग्सफोर्ड बच गया जबकि दो अंग्रेज महिलायें मारी गयीं। इसके बाद अन्य स्थानों पर भी बम विस्फोट कर ब्रिटि ा ाासन को हिला दिया। अलीपुर बम काण्ड के सिलसिले में गिरफ्तार एक व्यक्ति ने रहस्योद्घाटन कर दिया कि सेनापति बापट द्वारा लाई गई बम मैनुअल' को देखकर बम बनाया गया था। सेनापति बापट सावरकर के अनन्य सहयोगी थे यह सरकार जानती ही थी।

1857 का स्वातंत्र्य-समर

सावरकर ने 1907 में '1857 का प्रथम स्वातंत्र्य-समर' ग्रंथ लिखना ुरू किया। इंडिया आफिस के पुस्तकालय में बैठकर वह विभिन्न दस्तावेजों व ग्रन्थों का अध्ययन करने लगे।

उन्होंने लगभग ढेड़ हजार ग्रन्थों के गहन अध्ययन के बाद इसे लिखना ुरू किया। उन्होंने इसे मराठी में लिखा तथा साथ ही अंग्रेजी में भी अनुवाद किया गया। ग्रन्थ की पाण्डुलिपि किसी प्रकार गुप्त रूप से भारत और पेरिस पहुँचा दी गयी। परन्तु अंग्रेजों ने इसे प्रका ित न होने दिया। ब्रिटि ा सरकार इस ग्रन्थ के प्रका ान की संभावना से बहुत परे ाान थी। उसे भय था कि तथ्यों पर आधारित इस ग्रन्थ के प्रका ित होते ही भारत की स्वाधीनता का पक्ष संसार के समक्ष प्रकट हो जायेगा। अतः उसने ग्रन्थ के प्रका ित होने से पूर्व ही उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

अन्ततः 1909 में यह ग्रंथ फ्रांस से प्रका ित हो ही गया। बाद में सन् 1935 में महान् ाहीद सरदार भगतसिंह ने 'हिन्दुस्तान सो ालिस्ट रिपब्लिकन एसोसिए ान' की ओर से इस ग्रन्थ का अंग्रेजी संस्करण प्रका ित कराया।

ढींगरा ने बदला लिया

वीर सावरकर के 24 वर्षीय साथी पंजाबी युवक ढींगरा ने जुलाई 1908 को लन्दन के इम्पीरियल इंस्टीट्यूट के जहाँगीर हॉल में आयोजित एक समारोह में सर करजन वायली को गोलियों का नि ााना बना डाला। यह हत्या करजन वायली द्वारा भारत में किये गये अत्याचारों का प्रति ाोध लेने के उद्दे य से की गयी थी। इससे पूरा ब्रिटि ा साम्राज्य काँप उठा। करजन वायली की हत्या के विरोध में कुछ ब्रिटि ा भक्त भारतीयों ने ाोकसभा की तो सावरकर ने सार्वजनिक रूप से निन्दा प्रस्ताव का विरोध कर निर्भीकता का परिचय दिया। उन्होंने 'टाइम्स' में लेख लिखकर स्पष्ट किया कि जब तक ढींगरा पर अदालत में मामला है, उसे अपराधी करार नहीं दिया जा सकता। 26 अगस्त 1909 को मदनलाल ढींगरा को फाँसी पर लटका दिया गया। सावरकर उससे जेल में जाकर मिले थे तथा प्रति ाोध लेने पर बधाई भी दी। इस बीच सावरकर जी के भाई नारायण दामोदर सावरकर को भी

क्रांतिकारी गतिविधियों के आरोप में भारत में बन्दी बना लिया गया।

लन्दन में बन्दी

ब्रिटि ा सरकार तीनों सावरकर बन्धुओं को 'राजद्रोही' व खतरनाक तो पहले ही घोषित कर चुकी थी। करजन वायली की हत्या का समर्थन किये जाने के बाद विनायक दामोदर सावरकर के पीछे पुलिस पड़ गई। 23 मार्च 1910 को लन्दन के रेलवे स्टे ान पर सावरकर को बन्दी बना लिया गया। श्री सावरकर पर लन्दन की अदालत में मुकदमा चलाया गया। न्यायाधी ा ने 22 मई को निर्णय दिया कि क्योंकि सावरकर पर भारत में भी मुकदमे हैं। अतः उन्हें भारत ले जाकर वहीं मुकदमा चलाया जाये।

समुद्र में कूद गये

1 जुलाई 1909 को 'मोरिया' जलयान से सावरकर को कड़े पहरे में भारत रवाना कर दिया गया। 8 जुलाई को जलयान मार्सेल बन्दरगाह के निकट पहुँचने ही वाला था कि सावरकर ाौच जाने के बहाने ाौचालय में गए और फुर्ती के साथ उछलकर समुद्र में कूद पड़े। अंग्रेज अफसरों ने समुद्र की लहरें चीरकर तैरते हुए सावरकर पर गोलियों की बौछार ाुरू कर दी। सावरकर सागर की छाती चीरते हुए फ्रांस के तट पर पहुँचने में सफल हो गये। एक भारतीय क्रांतिकारी के इस प्रकार अंग्रेज अफसरों की आँखों में धूल झोंककर, समुद्र मे कूद जाने की घटना के प्रका ात होते ही पूरे संसार में सावरकर के साहस और ाौर्य की चर्चा हो गयी।

दो आजन्म कारावासों का दण्ड

15 सितम्बर 1910 को सावरकर पर भारत में मुकदमा ाुरू हुआ। उन्होंने देखा कि अभियुक्तों में उनके छोटे भाई नारायण दामोदर सावरकर भी हथकड़ी-बेड़ियों में जकड़े खड़े हैं। सावरकर ने स्पष्ट कहा कि भारत के न्यायालय से उन्हें न्याय की किंचित् भी आ ाा नहीं है। अतः वह अपना बयान देना

व्यर्थ समझते हैं।

23 दिसम्बर को अदालत ने उन्हें ब्रिटि ा सरकार के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने, बम बनाने व रिवाल्वर आदि ास्त्रास्त्र भारत भेजने आदि आरोपों में आजन्म कारावास की सजा सुना दी और उनकी तमाम सम्पत्ति भी जब्त कर ली गयी।

30 जनवरी 1911 को उनके विरुद्ध दूसरे मामले में भी आजन्म कारावास की सजा सुना दी गयी। इस प्रकार सावरकर को दो आजन्म कारावासों का दंड दे दिया गया।

कालापानी की कालकोठरी में

कुछ माह बाद महाराजा नामक जलयान से सावरकर को अण्डमान भेज दिया गया। अण्डमान की कालकोठरी में उन्हें श्री आ ातोष लाहिड़ी, देवतास्वरूप भाई परमानन्द, भाई हृदयराम सिंह, पंडित परमानंद (झाँसी वाले) आदि महान् क्रान्तिकारियों के साथ रहने का अवसर मिला।

अण्डमान में सावरकर को खतरनाक कैदी के रूप में रखा गया था। उन्हें अमानवीय यातनायें दी जाती थीं। कोल्हू के बैल की जगह जोतकर तेल पिरवाया जाता था, मूँज कुटवाई जाती थी। बात-बात में तनहाई में बन्द कर दिया जाता था। राजनीतिक बन्दियों पर वहाँ किस प्रकार अमानवीय अत्याचार ढाये जाते थे इसका रोमांचकारी वर्णन सावरकरजी ने 'माझी जन्मठेप' (आजीवन कारावास) में किया है। सावरकर जी के बड़े भाई गणे ा सावरकर भी अण्डमान में ही यातनाएँ भोग रहे थे।

जेल में साहित्य-सजन

सावरकर जी ने अण्डमान में कारावास के दौरान अनुभव किया कि मुसलमान वार्डन हिन्दू बन्दियों को यातनाएँ देकर उनका धर्मपरिवर्तन करने का कुचक्र रचते हैं। उन्होंने इस अन्यायपूर्ण धर्मपरिवर्तन का डटकर विरोध किया तथा बलात् मुस्लिम बनाये गये अनेक बन्दियों को हिन्दू धर्म में दीक्षित करने में सफलता प्राप्त की। उन्होंने अण्डमान की काल कोठरी में

कविताएँ लिखीं। अन्त में दस वर्ष बाद 1921 में सावरकरजी को बम्बई लाकर नज़रबन्द रखने का निर्णय किया गया। उनके साथ ही श्री गणे ा दामोदर सावरकर भी भारत लाये गये। उन्हें महाराष्ट्र के रत्नागिरि जेल में नज़रबन्दी में रखने के आदे ा हुए। उन पर राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने, वक्तव्य व भाषण देने पर कड़ा प्रतिबन्ध था।

नज़रबन्दी में हिन्दू संगठन

सावरकरजी ने अण्डमान के कारावास के दौरान अनुभव किया था कि हिन्दुओं को ऊँच-नीच व अस्प यता की कुरीतियों से मुक्त कर, उन्हें संगठित किया जाना राष्ट्रीय आव यकता है। अतः उन्होंने अपना जीवन हिन्दू संगठन के कार्य में लगाने का संकल्प लिया।

उन्होंने अपने अनुज नारायण राव सावरकर को प्रेरणा देकर 'श्रद्धानन्द' व 'हुतात्मा' नाम से साप्ताहिक पत्र प्रका ात कराये। वह छद्म नामों से इन पत्रों में लेख व कवितायें लिखते रहे।

हिन्दुओं का ुद्धीकरण

सावरकर जी ने रत्नागिरी में हिन्दू संगठन का रचनात्मक कार्य ुरु किया। उन्होंने सहभोजों का आयोजन किया जिनमें ब्राह्मणों से लेकर भंगी व महारों तक ने एक पंक्ति में बैठकर भोजन किया। उन्होंने विनायक मसूरकर महाराज को प्रेरणाा देकर गोआ भेजा वहाँ उन्होंने पुर्तगालियों द्वारा ईसाई बनाये गये हिन्दुओं को ुद्ध कर पुनः हिन्दू समाज में दीक्षित किया। उन्होंने रत्नागिरी में भी अनेक ईसाइयों व मुसलमानों की ुद्धि कराई। सावरकरजी ने रत्नागिरी में हिन्दूमहासभा की स्थापना कराई तथा उसके तत्वावधान में गणे ोत्सव, ि ावाजी उत्सव, कृष्णजन्माष्टमी, रामनवमी आदि पर्वों के माध्यम से हिन्दुत्व की चेतना पैदा की। 10 मई, 1937 को सावरकर जी के नज़रबंदी से मुक्त होते ही उनका भव्य स्वागत किया गया। 30 दिसम्बर, 1937 को अहमदाबाद में आयोजित अ. भा. हिन्दू महासभा के अधिवे ान में सावरकरजी सर्वसम्मति से अध्यक्ष

चुने गये। उन्होंने हिन्दू' की सर्वश्रेष्ठ व मान्य परिभाषा की। उन्हीं दिनों हैदराबाद के निज़ाम ने हिन्दुओं के धार्मिक अधिकारों पर रोक लगा दी। आर्यसमाज ने इसके विरुद्ध आंदोलन चलाया तो सावरकर जी ने उसमें सक्रिय योगदान की घोषणा की। उनकी प्रेरणा से हिन्दू महासभा के अनेक जत्थे हैदराबाद गये। आर्य नेता वन्देमातरम् रामचन्द्रराव तथा श्री य ावन्तराव जो ाी आदि हिन्दू भाइयों ने आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस तथा महामना मालवीय जी आदि राष्ट्रीय नेता सावरकर जी से बहुत प्रभावित रहे। 22 जून, 1940 को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने सावरकर सदन (बम्बई) जाकर उनसे भेंट की तथा उन्हीं की प्रेरणा से उन्होंने भारत से गुप्त रूप से पलायन कर विदे ाों में आज़ाद हिन्द सेना की स्थापना की। 25 जून, 1944 को नेताजी ने सिंगापुर रेडिया से अपने भाषण में स्वीकार किया था कि "जब काँग्रेस के तमाम नेता भारतीय सेना के सिपाहियों को "भाड़े के टट्टू" कहकर बदनाम कर रहे थे उस समय सबसे पहले वीर सावरकर ने ही भारतीय युवकों को सेना में भर्ती होने के लिए आह्वान किया। उनकी प्रेरणा से सेना में भर्ती हुए युवक ही हमारी आजाद हिन्द सेना के सिपाही बने।"

जब मुस्लिम लीग ने भारत विभाजन की माँग उठायी तो वीर सावरकर ने उसका डटकर विरोध किया। उनकी प्रेरणा पर दिल्ली के हिन्दू महासभा भवन में अखण्ड भारत सम्मेलन का आयोजन कर' 'पाकिस्तान' योजना का विरोध किया गया। अण्डमान में अमानवीय यातनाएँ सहन करने के कारण सावरकर जी अस्वस्थ रहने लगे थे। 26 फरवरी, 1966 को भारतीय इतिहास के इस अलौकिक महापुरुष ने इस संसार से विदा ले ली। अपनी अन्तिम वसीयत में भी उन्होंने हिन्दू संगठन व सैनिकीकरण के महत्व, ाुद्धि की आव यकता पर प्रका ा डाला। भारत को पुनः अखण्ड बनाये जाने की उनकी आकांक्षा रही।

गोधरा में ट्रेन की आगजनी एक सुनियोजित साजि ा थी

–हरिकृष्ण निगम

गोधरा में 27 फरवरी 2002 को साबरमती एक्सप्रेस से यात्रा कर रहे 59 रामभक्तों को जलाकर हत्या करने के विवादित प्रकरण में अन्ततः हाल में स्पे ाल कोर्ट ने निर्णय दिया कि एस–6 कोच को जलाया जाना एक सुनियोजित हमला था और उस वि ोष न्यायालय ने 31 आरोपियों को दोषी करार दिया। दे ा में कदाचित् स्वतंत्रता के बाद से यह पहली बार हुआ है कि कथित सेकुलरवादी विचारकों की वैचारिक दरिद्रता उस प्रकरण के नौ साल तक चले लगातार किए गए हाहाकार और गुजरात के मुख्यमंत्री के 'राक्षसीकरण' की अबाध गति से चली प्रक्रिया पर ाायद अब रोक लगेगी। कुछ भी हो इस निर्णय ने यू.पी.ए. सरकार और अंग्रेजी मीडिया के एक बड़े वर्ग की साजि ा की पोल खोल दी है। आज उन तत्वों की पहचान सहज है कि किस तरह तत्कालीन रेलमंत्री लालू प्रसाद यादव की पहल पर न्यायमूर्ति यू.सी.बनर्जी की अध्यक्षता में जाँच समिति का गठन हुआ था जिसने अपनी जाँच रिपोर्ट में स्वयं कार सेवकों को इस आगजनी का जिम्मेदार मानकर इस भयावह दुर्घटना को मात्र आकस्मिक मानते हुए उसे अन्दर से लगी हुई आग कहा था। स्पष्ट है कि सन् 2005 के चुनावों के परिप्रेक्ष्य में ही भाजपा विरोधी दलों के लाभ के लिए इसे दुष्प्रचारित किया गया था। यदि इस नरसंहार में लिप्त 64 अन्य लोग छूट गए तो इसका अर्थ मात्र यही है कि पुलिस कानून में स्वीकृत साक्ष्य नहीं जुटा पाई। पर यह तो सिद्ध हो ही गया कि गोधरा में 59 हिन्दुओं की हत्या में स्थानीय लोग ही षड्यंत्र में अकाट्य साक्ष्यों के अनुसार ाामिल थे।

जहाँ गुजरात की अ ाान्ति के मूल गोधरा में 59 यात्रियों को साबरमती एक्सप्रेस के एक कोच में 27 फरवरी 2002 के दिन जीवित जलाने की बात का ाोक तो दूर उसका दोष उन

यात्रियों पर ही लगाया जा रहा है और दंगों के नाम पर दुनियाँभर में दे ा की छवि आज भी धूमिल करने की साजि ा की जा रही है। अंग्रेजी मीडिया द्वारा नरेन्द्र मोदी के विरुद्ध बेमिसाल दुष्प्रचार की हर सीमा का अतिक्रमण तब हुआ जब यह कहा गया कि गोधरा स्टे ान पर जो कुछ भी हुआ हिन्दुओं ने स्वयं किया। अयोध्या से लौटने वाले कार सेवक डिब्बे में पेट्रोल या किरोसीन के डिब्बे लेकर चल रहे थे। उनके डिब्बों पर जलते गोले फेंके गए थे। वे भी राम सेवकों ने एक दूसरे पर फेंके थे। मतलब गोधरा में जो ट्रेन में सामूहिक नरसंहार हुआ उसमें स्थानीय धर्मान्धों का कोई दोष नहीं था। राम सेवकों ने स्वयं ही स्वयं की हत्याएँ कर गुजरात में दंगे किए। यह बात भी किसी मुस्लिम संगठन के उठाने से पहले हमारे अंग्रेजी मीडिया ने ही उठाई थी। इतना ही नहीं 19 जून 2004 के 'टाइम्स ऑफ इंडिया' जैसे दैनिक पत्र ने उस समय के अपने अग्रलेख में गोधरा के लिए नए जाँच आयोग के गठन की माँग करते हुए गोधरा के बारे में 'सर्च-ट्रुथ एबाउट गोधरा' ीर्षक से विषवमन किया था। यह लेख सिद्धार्थ वरदराजन ने लिखा था जिनका हिन्दू-विरोध उनके इसी पत्र में 'खोखला हिन्दूधर्म'-हौलो हिन्दुइज्म- जैसे पहले के प्रका ात अग्रलेखों से स्पष्ट है। साफ है कि गोधरा के बारे में दुष्प्रचार की आग कभी ठण्डी नहीं पड़ी थी और गुजरात के दंगों के बारे में आज भी ोकगीत लिखे जा रहे हैं। इस प्र न का उत्तर आज तक किसी ने नहीं दिया कि यदि दंगाई निर्बोध एवं निहत्थे अल्पसंख्यक थे तब उस दौरान एक सौ से अधिक पुलिसवालों या अर्धसैन्यबलों के जवानों की जानें कैसे गईं।

हमें भूलना नहीं चाहिए कि इस प्रकरण का पहला आरोप-पत्र पोटा के तहत 16 अप्रैल 2003 को फाइल किया गया था और 21 अप्रैल 2004 को पोटा अधिनियम ही निरस्त कर दिया गया

था। उसके बाद लालू प्रसाद यादव तब तक दो वर्ष बीत जाने पर इस प्रकरण की नये सिरे से जाँच करवाना चाहते थे और तभी जस्टिस बनर्जी आयोग का गठन हुआ था जिसने 17 जनवरी 2005 को अपनी अन्तरिम रिपोर्ट सौंपी थी और मीडिया ने इस चटपटे मसाले का लाभ उठाया। इसमें कहा गया कि यह हादसा मात्र एक दुर्घटना थी। लालू प्रसाद इस विषय पर नानावती आयोग के नतीजों से सन्तुष्ट नहीं थे क्योंकि उनके दुराग्रही और राजनीति-प्रेरित मन्तव्य की इससे पूर्ति नहीं हो रही थी। साफ है कि लालू प्रसाद यादव जी मानवाधिकार व सामाजिक न्याय के एक ऐसे स्काउट मास्टर बने जो साम्यवादी तत्वों व अंग्रेजी मीडिया के एक हिस्से के तालमेल द्वारा गुजरात प्र ाासन के विरुद्ध एक नई 'जम्बोरी' का आयोजन करना चाहते थे। मोदी के आलोचकों ने उन्हें क्या-क्या नहीं कह डाला- 'नीरो, हिटलर, युद्ध-अपराधी और साथ में हिन्दुत्व की तर्ज पर मोदित्व जैसा एक ाब्द भी गढ़ डाला। पर क्या यह सच नहीं है कि मोदी को जैसे-जैसे हर बार जनादे ा मिलता गया उस सफलता पर अनेक प्रतिष्ठित और प्रभावी काँग्रेसी व साम्यवादी नेताओं की बौखलाहट बढ़ती रही। अब स्थानीय आरोपियों की आपराधिक साजि ा न्यायालय द्वारा सिद्ध होने पर इससे अपराध की बीभत्सता कम नहीं होती। आरोपियों का इकबालिया बयान और समाचार-पत्रों के आगजनी के हादसे की तात्कालिक प्रत्यक्षद र्ी रिपोर्ट जो उस समय के मुद्रित वत्तांतों के रूप में साक्ष्य थे वे आज भी फिर जनता को उपलब्ध कराए जा सकते हैं। ाायद उनमें से एक भी रिपोर्ट ऐसी नहीं मिलेगी जो न्यायमूर्ति बनर्जी के निष्कर्ष की तरह कहे कि कार सेवक ट्रेन के भीतर से स्वयं अपने को जलाने के लिए जिम्मेदार थे।

ए-1002ए, पंच ाील हाइट्स, महावीर नगर,
कान्दिवली (प.) मुम्बई-400067

THE CONTRIBUTION OF THE VEDAS IN THE 3RD MILLENNIUM

-Priya Vrata Das

If the primitive and undeveloped steam engine of James Watt is today remembered and respected by the modern scientists, would it not be unwise and ungrateful to pay no attention and forget the first ever speech of man i.e. the Vedas by all the human beings. More so, when that knowledge is proved to be eternal and the prime source of all human efforts and happiness. These Vedas remain as the paternal property of mankind being revealed at the dawn of each human creation. They address to all possible spheres of healthy human activities.

"वेद चक्षु सनातनम्" The Vedas is the eternal eye. thus says the sage Manu. Swami Dayananda Saraswati in his book- "Introduction to the Commentary of the Vedas" writes, -- The Vedas having been revealed by and having always existed in the knowledge of God who is the first cause of combination and separation, who remains ever unchanged in his essence, who is without a beginning, eternal and unborn and whose might endures forever, their eternity and truthfulness of the knowledge contained in them are established.

We do not possess a book of a date prior to the Veda in the World Library. The Veda may be understood as one and singular in the sense it is the primary and seed knowledge of man. It is sometimes described as three in number i.e. RK (Poem), Yajuh (Prose) and Saman (Song) distinguished by their nature of composition. Generally speaking, the Vedas are four - Rk, Yajuh, Saman & Atharva basing on their respective subject matter namely ज्ञान (knowledge), कर्म (action), उपासना (communion) and विज्ञान (science)

Our Lord has manifested Himself to us in two ways (1) the entire creation and (2) His work. We find a beautiful versa in Atharva veda "देवस्य प य काव्यं न ममार न जीर्यति" (Av x 8.32) – "Appreciate the poetry of the Lord, the beauty of which neither dies nor decayes". The Veda is the Divine Theory and the Cosmic Creation is the Divine work. Maharshi Patanjali in his

Yoga Darshan (1.26) exhorts -- "स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्" – God is the first preceptor, and the Veda is the compendium of these precepts. God's revealed knowledge is the seed of all that man has brought upto this present status.

The revealed knowledge is the highest and ultimate authority - "तत् वचनात् आम्नायस्य प्रामाण्यं" says the celebrated sage Kanada. The Cosmic Creation and the Divine words are both eternal poetries, one reflecting the other. The Creator is all perfect, even so his Creation and Words i.e. Vedas. God and His revealed knowledge are concomitant terms. This is what implied in the expression "पूर्णमदः पूर्णमिदम्" (Perfectness) and "स्वतः प्रमाणः" (Self authority).

If there were no colour or form in natural objects, our eyes would have been purposeless. In the same analysis, our hearing and vocal organs would have been of no value had there been no Divine Words or Divine Speech, bestowed on us. The acoustic spectrum with all finer details pre-existed any of us in Nature's creation. This explains the existence of Divine speech which has passed on to us in the form of 'Shruti'. In this context, it is often said that God is Word and Word is God and God has been with the word and word with God.

The 'Shastra's are 'Paurusheya' being composed by man in the light of 'Shruti' i.e. the Vedas. It is to be emphasised that the "Shruti" and "Shastra" have to be treated differently. Swami Vivekananda describes the Shastras as second generation books. He exhorts "the Second Class Books (of Manu, Yajnavalkya, Puranas down to the Tantra) are subordinate to the Shruti (the Vedas) in as much as whenever any one of these contradicts any thing in the Shrutis, the Shrutis must prevail."

Through millennia our ancestors have preserved the Shrutis with utmost accuracy and have drawn inspiration from the vedic wisdom. Prof. Max Muller observes, "The Texts of the Vedas have been They could not imagine the infinite. But with the advent of the Arya Samaj Movement, when people have become educated, they now not only have a better means of

livelihood but have also become people of noble and refined character; they can think and make their own decisions; they have developed a critical mind and have become rational beings; they can conceptualize the infinite as they have learnt about the infinite nature of the Supreme Being. They have studied the scriptures and literature associated with the Arya Samaj and consequently have a greater understanding of "Dharma" (righteousness) in a universal manner, that is in relation to the whole of mankind. They have developed a sensitive mind full of consideration for others; they have also acquired a real knowledge of the self.

Swami Dayanand ji declared that he had not brought anything new, he had not invented anything, but had drawn all his ideas from the Vedas "was heard, appreciated and carried into action by many. Thus many people, started reading the scriptures, particularly the Vedas.

With the study of the Vedas, the Upanishads and other scriptures, people started learning about the intrinsic living values and about the soul as propounded in these sacred books. For example, in Atharva Veda, 18/8/44, it is said "The individual soul is selfless, without and desire, firm, immortal self existent and contented with his own blessedness. He is not deficient or lacking from any side, any where but perfect in all respects. The man who knows the soul as firm, not prone to decay, and ever young does not fear death.

Moreover, through the Hindu Scriptures, we learn about the Law of Karma: rebirths until salvation, rebirth according to our deeds in previous births, about union of immortal soul with the mortal body and about the transmigration of the soul. (see Rg Veda - 8/43/9 and Yajur Veda - 12/36). Again in Rig Veda - 1/164/20, Atharva Veda 9/9/20 and in Mundakopanshad 3/1/1 the Individual soul and the Supreme Soul are compared to two beautiful birds perched on the same tree, united in the bond of friendship, but one of them eating the fruit of the tree (that is, enjoying the fruit of his actions), while the other (the

Supreme Soul) simply observing as Impartial Dispenser of justice without tasting the fruit of the tree as He is not affected at all by the result of His actions.

Such knowledge makes us have greater strength of character, gives us courage to persevere against all odds To give such knowledge to the mass, the Arya Samaj Purohits (Priests), the Pracharaks (Preachers), the Acharyas and the Swamis have by means of their sermons, Upnishad kathas and lectures made the masses more spiritual.

I wish to make a request to the Arya Samaj family of the world. There are many scholars, Acharyas, Swamis and other people, well-versed in the scriptures, who are old and are not well cared for, but who can still share much of their experience and knowledge with us. So, I wish to make a plea that a charitable institution be set up in India to take care of such learned people, who in return can enrich us with their erudition. Besides, some sort of institute could be founded to have the Vedas and other scriptures related to the Arya Samaj translated and published in many languages such as Tamil, Telegu, Marathi, Gujarati, English and French so that the contents of these books may be accessible to one and all. In this way Vedic culture and values can be easily disseminated and perpetuated, and the emergence of a better society can be expected. All the countries having an interest in the Arya Samaj are invited to contribute generously towards the implementation of these two ambitious projects at the earliest.

Thus, we see, the Arya Samaj is conductive to bringing greater spirituality in one and all; it has made people more refined, critical, rational, sensitive and selfless; it has infused in us strength of character, nobility, generosity, a sense of justice and equality, a feeling of brotherhood as well as fearlessness and perseverance. People do not have blind faith in rituals or superstition; people talk sweetly and in a calm manner, and live a life full of actions. Moreover, the Arya Samaj through its popular mottoes has inspired in us tolerance, friendship and love for one and all.

Learning From The Upanishads

-Ashok Vohra

Etymologically the word 'Upanishad' means sitting near a teacher and devoutly learning from him. It is believed that innumerable Upanishads existed. Many of them are lost. However, 108 have been preserved. Out of them too, 10 Upanishads- for which Shankaracharya wrote a commentary-are treated as 'principal Upanishads'. They are: Isha, Kena, Katha, Prashna, Mundaka, Mandukya, Taittiriya, Aitareya, Chhandogya and Brihadaranyaka. Some scholars add Svetashvatara Upanishad also in the category of principal Upanishads.

The names of Rishis or sages whose wisdom and thoughts constitute the Upanishads are not known. Since the Upanishads mark the end of the four Vedas-the source of philosophical thinking in India-they are also called 'Vedanta', the end or the perfect culmination point of the teachings of Vedas. Upanishads, therefore, incorporate the highest wisdoms of the Vedas.

The Upanishads teach us absolute and unqualified equality of all human beings. Atman, soul, is the essence of each individual, and Brahman, the Supreme Self, is the ultimate reality. Though the appearance of each individual is different from others, the same Atman pervades all beings. Atman or Brahman is the root of this manifest universe.

Like Brahman, Atman too cannot be defined by any finite attribute; it can only be described as neti, neti-not this, not this. Atman is Sat and Chit. The Upanishads teach us, Aham Brahmasmi and Tat tvamasi-I am Brahman, so are you. Each individual is, therefore, Brahman. Since ontologically each one of us is Brahman, there is nothing outside of us. Consequently, there is no notion of 'Mam and Tava' - 'mine and thine' and hence there is no possibility of Ahamkara or ego.

Upanishads do not glorify either poverty or the weak. They say that perfection cannot be achieved by the weak. They teach us to pursue not just material values but also spiritual values. They do not emphasise the pursuit of Dharma and Moksha alone; they emphasise the synthesis of Kama and Artha that is desire and wealth, in our action. They teach that materialism with its emphasis on material prosperity alone is as grossly wrong as the pursuit of spiritualism with emphasis on metaphysical matters. They teach us not to neglect or ignore our material welfare at the cost of spiritual goals and vice versa.

Nonetheless, the Upanishads teach us that material aspects of life, however important they may be in human existence, do not exhaust the whole of the personality of an individual. They stress that "man is never satisfied by wealth alone" and that "desires are never satiated by the enjoyment of desires; thereby they only flame forth ever more like fire with butter". That is why they teach us to enjoy through renunciation'.

Upanishads make a distinction between 'need' and 'greed'; between 'needs and 'preferences'. They do not deny either pursuit of wealth, or of competition, or of innovation. Whatever goals moderation, following the doctrine of golden mean or the middle path.

Our primary goal should be enhancement of the welfare of all including conservation and preservation of our environment. Upanishads teach us that the pursuit of our goals, dealings, endeavours and our commercial and business enterprises must be guided by Dharma-moral principles.

Date of Pubn. : 31.05.2014   Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 June.2014
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062   Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2014-2016

द्यौ ाान्तिरन्तरिक्षं ाान्तिः पथिवी ाान्तिरापः ाान्तिरोषधयः ाान्तिः।
वनस्पतयः ाान्ति वि वेदेवाः ाान्तिर्ब्रह्म ाान्तिस्सर्वं
ाान्तिरेव ाान्तिः सा मा ाान्तिरेधि।।

ऋषि – दध्यङ्ङाथर्वणः, देवता–ई वरः, छन्द–भुरिक्छक्वरी

अर्थ– हे सब दुःखों को ाान्त करने वाले प्रभो। (द्यौः) सूर्यादि प्रका ा युक्त पदार्थ सुखकारक, ाान्तिदायक हों। हमें अन्तरिक्ष और पथिवी सुखप्रद और निरुपद्रव हों। पथिवी पर विद्यमान जल, औषधियाँ और विभिन्न वनस्पतियाँ तथा (वि वेदेवाः) संसार के सब विद्वान् सुख ाांति देने वाले हों। 'ब्रह्म' परमात्मा तथा वेद में निहित ज्ञान सुखदायी हो। अन्य सब पदार्थ निरुपद्रव हों। मुझे वह ाान्ति प्राप्त हो जिससे मैं भी आपकी कृपा से ाान्त, क्रोधादि रहित होऊँ और संसार के सभी जीव भी क्रोधादि रहित हों।

Oh God, May the celestial regions beyond all the planetary bodies, by Your grace, be peaceful for us. May the intermediate region, the atmosphere and other phenomena be peaceful for us. May the earth, the waters, herbs, vegetables and, cereals and all other products; all these, by Your grace be conducive to our well-being. May all the learned men, Vedic lore, the sun and other planets, You the Supreme Being alongwith the whole universe be peaceful for us. Oh Almighty God, may all living beings of the world be free from all evil passions.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58